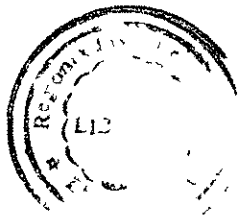

अध्याय द्वितीय

साहित्य का पुनरावलोकन :-

२.१ संक्षिप्त परिचय - प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसधान की प्रकिया मे एक महत्वपूर्ण कदम है । वस्तुत साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारम्भिक कदम है ।

शिक्षा मे दोनो प्रकार के अनुसधानो क्षेत्रीय अध्ययनो तथा पुस्तकालयो और लेखो पर आधारित अध्ययनो मे साहित्य का पुनरावलोकन अत्याज्य अग है । साहित्य का पुनरावलोकन अनुसधान मे गुणात्मक स्वर के निर्धारण मे एक महत्वपूर्ण कारण है ।

साहित्य के पुनरावलोकन से निम्नलिखित लाभ है -- जिनके कारण ही प्रत्येक शैक्षिक अनुसधान की भविष्य मे होने वाले शोधकार्यो की रूप रेखा का निर्माण होता है ।

१ पुनरावलोकन से पूर्व मे किये गये अध्ययन (शोध) की जानकारी अनुसधान को होती है।

२ अनुसधान कर्त्ता को अनुसधान के विषय क्षेत्र के ज्ञान का विस्तार होता है ।

३ पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसधान कर्त्ता को स्वय के अनुसधान के विधान की रचना करने के सम्बन्ध मे अन्तदृष्टि प्राप्त होती है । जिससे उसे उपकरणो मे चयन, अनुसधान विधि के चयन, व्यक्तियो के चयन समस्या मे परिसीमन, समस्या की परिभाषा आदि के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है ।

४ नवीन समस्याओ की जानकारी मिलती है ।

५ स्थान के अनुसार सत्यापन करने आवश्यकता होती है जैसे अमेरिका मे हुये अनुसधान का परिणाम भारत मे या भारत की जनसख्या के एक भाग मे हुये अनुसधान का दूसरे भाग मे क्या प्रभाव पडता है ।

२.२ सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन -

''**जीवन की अवधारणा**'' क्या है । जीवन की अवधारणा सदैव से ही मनुष्य के लिये शोध की विषय --वस्तु रही है । शिक्षा के क्षेत्र मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जीवन की अवधारणा'' अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योकि बच्चे जन्म के पश्चात परिवार, आस--पास के वातावरण, तथा वस्तुओ के सम्पर्क मे आते है । विकास की अवस्थाओ मे परिवर्तन के साथ--साथ उनकी मानसिक सरचनाओ मे परिवर्तन होता है तथा वे सजीव और निर्जीव मे अन्तर जानने की चेष्टा करते है ।

जीन पियाजे ने सर्वप्रथम १६२६ मे यह अवलोकन किया कि बच्चे प्राय जड़ या मृत और सृष्टि की ओर अभिमुख क्यो रहते है । वे अपनी सवेदनाओ से कैसा महसूस करते है । पियाजे ने इसे जीवो की ओर अभिमुख होना बताया । इसके लिये उन्होने साक्षात्कार का प्रयोग किया और चार अवस्थाओ बच्चो के विकास के गुणो के आधार पर वर्गीकृत किया कि " बच्चो मे **"जीवन की अवधारणा "** क्या है ।

प्रथम अवस्था मे ६–७ वर्ष के बच्चो मे गतिविधियो द्वारा जैसे गिरना, उठना आदि द्वारा पाठ प्रर्दशन किया गया और जो अजीवित से सम्बन्धित था ।

द्वितीय अवस्था मे ८–६ वर्ष के बच्चो ने गतिशीलता को जीवन बनाया और कोई गतिशील या चलने–वाली वस्तु अजीवित है ।

तृतीय अवस्था मे ६–११ वर्ष के बच्चो ने बताया कि जो लगातार चल रहा है जैसे सूर्य, हवा, नदी ये अजीवित है । इतनी उनमे चेतना थी । चतुर्थ अवस्था मे ११ वर्ष से अधिक उम्र के बच्चो से ही उत्तर पाया गया कि केवल जो जड स्थिर है वे अजीवित है, अर्थात चेतना विकसित हो रही थी ।

लूफ्ट और वाटज ने १६६६ मे जीववाद का पुर्नरावलोकन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि जीवित वस्तुओ की कल्पना सभी उम्र के बच्चो मे पायी गयी, वयस्को मे भी ।

वर्जोनस्की ने सन् १६७१ मे यह पाया जीवित अनाश्रित है अन्य कारणो की तुलना मे। स्मीट ने सन् १६७४ मे यह पाया कि ११ वर्ष के बच्चे पेड पौधो, जानवर, और मनुष्य के बारे मे जीव विज्ञानात्मक जानकारी रखते है ।

लूफ्ट और बोर्ट्ज १६६६ मे बताया विज्ञान के जीव–विज्ञान पाठ्यकम का केन्द्र जीवन की अवधारणा है । यह शिक्षको के लिये महत्वपूर्ण है कि वे छात्रो मे जीवन की अवधारणा के लिये जागरूक रहे ।

वर्तमान मे अध्ययन के लिये कुछ समस्या के नाम दिये है कि छात्र अजीवित को किस प्रकार नोट करते है उनका अर्थ ग्रहण करते है ।

Regional Institute of Education LIBRARY

प्रश्न– १ बच्चे जीवित और अजीवित मे अन्तर अच्छी तरह कैसे कर सकते है?

प्रश्न– २ वे कौन क्षेत्र वर्गीकरण मे प्रयुक्त करते है?

प्रश्न– ३ क्या बच्चो की अजीवित के अर्थ के सम्बन्ध के अर्थ मे अन्य अवधारणाए है?

प्रश्न– ४ क्या बच्चे कुत्ते या बादल की गति के बारे मे एक जैसा या अलग–अलग सोचते है?

प्रश्न–५ बच्चे जीवन की निरन्तरता को कैसे ग्रहण करते है । इसका बीज और अण्डो के विकसित होने के सम्बन्ध मे क्या प्रभाव पडता है?

प्रश्न–६ योग्यता और अवधारणा को अपर उठाने मे (बनाने मे) लिग अमीरी, गरीबी और उपलब्धि का विज्ञान पर क्या प्रभाव पडता है?

२.३ विधि :-

उपकरण – १६ चित्रो को एकत्रित करके एक वर्गीकरण परीक्षण किया, जिसमे ८ जीवित वस्तुओ और ८ उससे सम्बन्धित वस्तुओ को रखा गया । जीवित वस्तुओ मे तीन वयस्क जानकार (बिल्ली, चिडिया और मछली) वयस्क पौधो मे (पेड, हरबासयूस का पौधा मशरूम) तथा २ भ्रूणीय (बीज, अडे) को रखा । ८ सम्बन्धित वस्तुए जो जीवित उत्पादो से सम्बन्ध रखती थी उन्हे रखा गया। जैसे गतिमान (ट्रेन,नदी, बादल, हवा) गर्म (सूर्य, आग) श्वसन(हवा) तथा अतिम वस्तु के रूप मे टी वी को रखा जिसे हम सभी प्राय देखते है ।

निम्नलिखित प्रश्नो के आधार पर साक्षात्कार के दौरान प्रश्न पूछे गये ।

१ तुम यह कैसे निर्धारण करते हो कि कुछ वस्तुए सजीव है ?

२ प्रत्येक तस्वीर को देखकर निर्धारित करो यदि यहॉ सजीव और निर्जीव है ?

३ तुमने वह कैसे निर्धारित किया कि यह सजीव/निर्जीव है (उत्तर बी के अनुसार)?

४ तुम्हारे कहने का अभिप्राय क्या है जबकि कुछ वस्तुए 'सजीव' है ?

उपरोक्त प्रश्नो के आधार पर प्रश्नावली तैयार की गयी ।

दत्तो के सकलन की पृष्ठभूमि मे लिग, पिता का व्यवसाय तथा विज्ञान के स्तर को दृष्टिगत रखा ।

२.४ न्या॓दर्श -

न्या॓दर्श के रूप मे १७ विद्यालयो के ४२४ विद्यार्थियो को महानगरो, कस्बो और ग्रामो को सम्पूर्ण देश से किया गया ।

जिनका विवरण निम्नानुसार था ।

कक्षा ३–४ – विद्यार्थियो की सख्या – ७०

सभी विद्यार्थियो को आर्थिक स्तर औसत तथा औसत से ऊपर था ।

कक्षा ५–६ – विद्यार्थियो की सख्या – २२० मे से ६६ सास्कृतिक रूप से पिछडे तथा वचित समूह के विद्यार्थियो को रखा ।

कक्षा ७–६ – विद्यार्थियो की सख्या १०४ जिसमे २३ पिछडे बालक थे ।

प्राप्ताको की सारणी १ तथा २ बनायी गयी ।

२.५ निष्कर्ष -

वर्गीकरण – तालिका एक मे वर्गीकरण वाले प्रश्नो के परिणामो का वितरण दिखाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि सभी प्रयोज्य तीनो जानवरो (जन्तुओ) को सही–सही वगीकृत करने मे सक्षम थे।

जिन प्रयोज्य को नदी को वर्गीकृत करने मे कठिनाई थी वे दूसरी अजीवित चित्रो को वर्गीकृत नही कर सके परन्तु उन्हे पौधे या जन्तुओ के सम्बन्ध मे कोई कठिनाई नही थी । चार उप परीक्षा के प्राप्ताक इस बात की पुष्टि करते है या तो बहु कम या बिल्कुल भी सह सम्बन्ध नही पाया गया।

पौधो और भ्रूण के वर्गीकरण का सह सम्बन्ध $r = 0.44$ पाया गया जिससे स्पष्ट है कि जिनको पौधो के सम्बन्ध मे कठिनाई थी उन्हे ही भ्रूण को वगीकृत करने मे कठिनाई महसूस हुयी ।

विभिन्न समूहो के बीच तुलना करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये ।

१ कक्षा स्तरो के बीच कोई साख्यिकीय सार्थक अन्तर नही था ।

२ नियमित और सास्कृतिक रूप से पिछडो के बीच केवल एक सार्थक अन्तर पाया गया।

नियमित छात्रो के लिये, पौधो के सदर्भ मे औसत वर्गीकरण प्राप्ताक २५६ एस डी – ०८६ था जबकि सास्कृतिक पिछडे छात्रो के लिये २२४ और एस डी – १२४ था ।

३ विज्ञान मे उपलब्धि और वर्गीकरण योग्यता के बीच कोई सह सम्बन्ध नही था।

४ पौधो और अजीवित पदार्थो के वर्गीकरण मे लडकियो की अपेक्षा लडको के प्राप्ताक सार्थक रूप मे अधिक थे ।